____ उदय शंकर प्रसाद

[पूर्व सहायक प्रोफेसर (फ्रेंच विभाग), तमिलनाडु]

इयाद बहुत आवेला

इयाद बहुत आवेला उ दिन,
पुअरा के बराई हो
जहवा पुरा गाव मिले,
उ घउरा के तपाई हो

खाना सबके घरे बने,
बड़का-बड़का चूल्हा जरे
मिल-बाट सब काम के करे,
तबो मिल जाय टाइम हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन
पुअरा के बराई हो

सबके सब से प्यार रहे खूब
ना अईले पे खोजाई हो
गाव के रहस बड़की भौजी
करस उ मुखियाई हो

सभे उनके बात के माने
केहू ना झगड़ाईन हो
हा-हा ही-ही खूब होखे
पर केहू ना खिसियाई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन
पुअरा के बराई हो

रात-रात भर घउरा जरे
खींच-खींच खूब पुअरा बरे
जेके जबे नींद खुले
उ घउरा पे आ जाई हो

राह चलत सब् केहू तापे
करे हाथ गोड़ सेकाई हो
जान सभे लोग बीठई देवे
प्यार से लोग बिठाई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन
पुअरा के बराई हो

उ घउरा मे कोन सेकाये
आलू भी डलाई हो
तनी-तनी सबके मिले
फूंक-फूंक घोटई हो

धीरे-धीरे गांव ओराइल
बड़की भउजी माई हो
घर के बगल मे घर बनल
अब घउरा कहा बराई हो

इयाद बहुत आवेला उ दिन
पुअरा के बराई हो

~~~o~~~
~~~